आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 2/जून 2022
Received: 11/06/2022; Accepted: 11/06/2022; Published: 24/6/2022

समकालीन लेखिकाओं की कहानियों में सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति

- नीतु. एस.एस
शोध छात्रा
केरल विश्वविद्यालय
ई-मेल: neethubreethesh@gmail.com

नीतु. एस.एस, समकालीन लेखिकाओं की कहानियों में सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 2 / जून 2022,(95-98)

साहित्य समाज का उपज है। इसलिए ही सामाजिक वातावरण से साहित्य कभी अछूता नहीं रह सकता। जिसके फलस्वरूप सामाजिक गतिविधियों का सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव साहित्य को और साहित्य से उत्पन्न चेतना प्रवाह समाज को निरंतर परिवर्तनशील बनाए रखते हैं। साहित्य और समाज की इस परस्पर पूरक लेन - देन को लेकर महान साहित्यकार प्रेमचंद का कथन है कि " साहित्यकार बेहुधा अपने देश से प्रभावित होता है। देश में जब कोई भी लहर उठती है तो साहित्यकार के लिए उनमें अविचलित रहना असंभव हो जाता है। उसकी आत्मा देश बंधुओं के कष्टों से विकल हो उठती है। इस तीव्र विकलता से वह रो उठता है ,पर उसके रुदन में व्यापकता होती है। " सामाजिक विषमताओं भ्रष्टाचारों तथा वैयक्तिक स्वार्थों से आशांत , पीड़ित समाज की दयनीय परिस्थितियों को उसके वास्तविक रूप में समाज के सामने प्रस्तुत करना सामाजिक यथार्थ का लक्ष्य होता है। सामाजिक यथार्थ को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान करने का सफल प्रयास अधिसंख्यक हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में स्पष्ट जाहिर है। कृष्णा अग्निहोत्री, मेहरुन्निसा परवेज, मधु कांकरिया ,मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल आदि कई लेखिकाओं की कहानियाँ सामाजिक गतिविधियों व समस्याओं का ही दर्पण है।

आजकल एक प्रमुख समस्या है परिवार में वृद्धों के प्रति बढती उदासीनता एवं तिरस्कृत मनोभाव। हिंदी की कई लेखिकाओं की कहानियों में पाश्चात्य सभ्यता की स्वार्थपरक वातावरण में ग्रसित युवा पीढ़ी के बीच जकडी हुई वृद्ध आत्माओं का रुदन चित्रित है। कृष्णा अग्निहोत्री की धुआं, अनुकंपा, बदमिजाज, चातकी, बिटिया आदि चर्चित कहानियों में वद्ध जीवन की विकलता का मार्मिक चित्रण मौजूद है। 'बदमिजाज' कहानी का पात्र

वेद प्रकाश नवीन पीढ़ी की मूल्यहीनता को लेकर अपनी पत्नी से इस प्रकार आशंका प्रकट कर रहा है कि-" लगता है हेमा भौतकवादिता का अंतिम चरण आ गया । पूंजी कमाने की निजी स्वार्थी भावना इतनी निष्ठुर हो गई कि रुपये कमाने के अलावा मनुष्य और मनुष्य के बीच अन्य कोई संबंध ही नहीं रहा।" दीप्ति खंडेलवाल की कहानी 'एक और कब्र' में भी पीढिगत अंतराल को ही पर्दाफाश किया है। प्रस्तुत कहानी में नई पीढ़ी का पुरानी पीढ़ी के प्रति अवज्ञा को दर्शाया गया है। कहानी का पात्र गुप्ता जी एक स्वेटर के लिए तरसने वाला बुजुर्ग है। लेकिन उसे एक स्वेटर तक बुनकर देने के लिए परिवार में किसी को फुर्सत नहीं थे। बूढ़ी पत्नि कृष्णा व कामकाजी बहू कांता दोनों ही गुप्ता जी का इस छोटी सी फार्माइश को पूरा करने में असफल रहे। अपनी भाग दौड़ भरी जिंदगी के बीच बुजुर्ग मां-बाप बच्चों के लिए बोझ बने पड़े थे। छोटा बेटा का मां से कथन है- "पैदा करना आपकी जिम्मेदारी थी पैदा होना हमारी जिम्मेदारी थी क्या?" विडंबना है कि नहीं नवीन पीढ़ी बचपन से लेकर बड़े होने तक अपनी हर छोटे-मोटे ख्वाहिशों को पूरा करना माता पिता का कर्तव्य जरूर मानते हैं लेकिन बुढ़ापे में उन लोगों की देखभाल करने के लिए वे तैयार नहीं है।

बेरोजगारी सामाजिक संदर्भ में एक ज्वलंत समस्या है। मधु कांकरिया की 'चिड़िया ऐसे मरती है', 'बीते हुए', कृष्णा अग्निहोत्री की 'निठल्ले' ,'कमाऊ' ,'जिंदा आदमी' आदि कहानियों में बेरोजगारी की भीषणता चित्रित है। 'चिड़िया ऐसे मरती है' कहानी का पात्र विजय की मानसिकता का वर्णन इस प्रकार हुआ है कि "मुझे लगता है कि मैं इस सृष्टि के सर्वाधिक विकृत और अधूरी रचना हूँ, बल्कि एक कीड़ा हूँ धीरे-धीरे रेंगने वाला। नौकरी जरूरत होती है, नौकरी से मिलने वाली एक इज्जत होती है घर से निकलने की हडबडी होती है ,जिसके पास वक्त नहीं होता। जबकि मेरे पास यदि कुछ था तो वह वक्त ही था। जिससे मैं काट नहीं पा रहा था इस कारण वक्त मुझे काट रहा था।" कृष्णा अग्निहोत्री कृत 'जिंदा आदमी' कहानी में नौकरी क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार के वजह से निठल्ले घूमने का नियति प्राप्त शिक्षित बेरोजगारों का चित्रण हुआ है। कहानी का नायक आशीष जब इंटरव्यू देने गए तो वहां उपस्थित एक अन्य उम्मीदवार का कथन है कि "अपने अपने आदमियों की लिस्ट पहले ही तैयार होगी।... नाटक है नाटक। यदि योग्यता और अनुभव की ही कीमत होती तो आज इतना पढ़ लिखकर मैं या तुम इतने संत्रस्त व टूटे ना होते। दे लो इंटरव्यू पर पढ़ने से ज्यादा सोर्स (रिश्वत) पर जुड़ जाओ।" चित्रा मुद्गल जी की 'बंद', 'लपेटें' कहानी का विषय भी शिक्षित बेरोजगारी ही है।

वर्तमान युग में नर-नारी संबंध के लिए नवीन स्वरूप एवं परिभाषा वर्कर आने लगे हैं। लेखिका गीताश्री अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री - पुरूष रिश्ते की सार्थकता पर विवाह से ज्यादा प्रेम को प्रमुख मानती है। 'प्रश्न कुंडली' कहानी का पात्र शिवांगी- स्मिता का कथन है कि -मेरा दांपत्य जीवन चलेगा या नहीं। बहुत तरह के इशूज़ है हमारे बीच। जो कभी शॉरटआउट नहीं हो सकते। मेरी भी कुछ विवशताएँ हैं ,उनकी भी कुछ परेशानियां डिमांड्स... हम बहुत उलझ गए हैं, हम जानते हैं कि हम एक दूसरे के साथ नहीं रह सकते फिर भी रहते हैं। हम दो तरह के लोग गलत तार एक साथ जुड़ गए हैं। हम एक दूसरे से प्यार करते हैं पर एक दूसरे को

बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं। आप हमारी ढेरों कुंडली बनाकर देखिए इस रिश्ते का क्या भविष्य दिखता है? शिवांगी का प्रस्तुत कथन आजकल प्रत्येक घर की समस्या है। यह आधुनिक दुनिया की सच्चाई है कि पति पत्नी के रिश्ते केवल आपसी समझौता मात्र बन चुका है। कृष्णा अग्निहोत्री की 'अपने-अपने कुरुक्षेत्र' कहानी नर - नारी संबंध के लिए एक विचित्र मिसाल में है। कहानी की नारी पात्र विजया विकास एवं अनु से एक साथ रिश्ते जुड़ाकर रखी है। जो पुरुष क्रमशः पिता पुत्र है। संपूर्ण समाज विचित्र एवं अनैतिक घोषित करने वाले प्रस्तुत संबंध को लेकर विजया का मत है- " वैसे स्त्री पुरुष के शारीरिक संबंधों का निर्णय उनका अपना निजी है, उससे ना तो धर्म पर ठेस पहुंचती है, ना ही नीति की ऋचाएं व इबारतें बदलती है।..... द्रोपदी ने पांच भाइयों से संबंध निभाए मैं क्या बेटे बाप से नहीं निभा सकती? ..... जो कुछ मैंने किया उसका मेरे पास कोई स्पष्ट कारण नहीं जब कोई पुरुष मां बेटी से एक साथ संबंध रख सकता है तो मैं क्यों नहीं आप और अनु को निभा सकती।" मेहरुन्निसा परवेज़ के 'आकाशनील', 'बीच का दरवाजा' , 'अयोध्या से वापसी' आदि कहानियाँ भी विवाह पूर्व संबंध ,वैवाहिक संबंध और विवाहेतर संबंध जैसे नर-नारी संबंधित विविध रूपों को यथार्थ के धरातल पर चित्रित किया है।

समाज में नारी की कल्याणकारी विकास के लिए एक प्रमुख कारण है आर्थिक स्वावलंबिता। लेकिन कामकाजी नारी के लिए परिवार और समाज से प्राप्त तनाव नारी विकास यात्रा के लिए बाधक तत्व है। मेहरुन्निसा परवेज की कहानी 'आकाशनील' में पति की हरकतों की वजह से स्वयं अर्थोपार्जन करने का पहल करती हुई नारी का चित्र मौजूद है। कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में आल्फा वुमन की चित्रण किया गया है नारी का जो रूप आजकल सर्वत्र विद्यमान है । अल्फा वुमन से मतलब है जो नारी पारिवारिक कामकाज एवं नौकरी दोनों में सामंजस्य स्थापित कर दोनों पक्ष के प्रति अपना उत्तरदायित्व सफलतापूवर्क निभाने में बेजोड़ है। 'हेड व टेल' कहानी का पात्र हेमा इसके लिए नमूना है।" पाँच बजे सुबह से उठकर घर का काम निपटाती है.... बच्चों का नाश्ता तैयार कर नौकरी की और पैदल दौड़ लगाती है .....लौटती है तो झोले में घर की सामग्री रहती ही है । बच्चे साल भर प्रेस किये कपड़े पहनते हैं और घर का वातावरण शालीन है।" आजकल हर एक कामकाजी नारी की सच्चाई है।

निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि समाज की प्रमुख एवं अत्यंत सूक्ष्म समस्याओं को भी यथार्थ की धरातल पर प्रस्तुत करने की प्रतिभा इन लेखिकाओं में खूब दृष्टिगोचर है।आलोच्य कहानियों से यह स्पष्ट परिलक्षित है कि परिवेशगत सच्चाइयों के बोध से जीवन के प्रति मानव का दृष्टिकोण में भी परिवर्तन सुनिश्चित है। सामाजिक समस्याओं एवं विसंगतियों का यथार्थ चित्रण करने के जरिए पाठकों में सकारात्मक सोच को जगाने का प्रयास इन लेखिकाओं का परम लक्ष्य है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

- साहित्य का समाजशास्त्र- नगेंद्र पृ.२८
- हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद- त्रिभुवन सिंह पृ.२४२

- कठौती- कृष्णा अग्निहोत्री पृ.३२
- चिडिय़ा ऐसे मरती है- मधुकांकरिया पृ.९
- कठौती भाग :2 - कृष्णा अग्निहोत्री पृ.१४३
- डाउनलोड होते है सपने- गीताश्री पृ.५४
- कठौती भाग- 3- कृष्णा अग्निहोत्री पृ.४१६
- कठौती भाग- 3- कृष्णा अग्निहोत्री पृ.१०४

****